प्राथमिक शिक्षा और अनुसंधान

आरती सक्सेना
शिक्षा विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत.

शोध साराश
शैक्षिक प्रसार की योजनाओं में प्राथमिक शिक्षा में अध्यापन का विशेष महत्व है। इसी संदर्भ में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा विषयक शोध कार्य व जानकारी उपयोगी है। प्राथमिक स्कूलों में समय–समय पर नामांकन का प्रतिशत, अध्यापकों की संख्या, अध्यापक प्रशिक्षण, छात्र व अध्यापक अनुपात प्राथमिक शिक्षा पर व्यय, आदि विषयक शोधकार्य उपयोगी हैं। शिक्षा और बालकों का आपस में बहुत गहरा संबंध है। इस संदर्भ में शिक्षा का स्तर जितना अच्छा होगा और वह जितने लंबे समय तक जारी रहेगी, बच्चों के लिए उतने ही अधिक लाभदायक अवसर होंगे। बाल अधिकार समझौते में जोर दिया गया है कि सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। इस बारे में वैधानिक व्यवस्था हो तो प्राथमिक बाल शिक्षा का आकार काफी बढ़ जाएगा। स्कूलों के लिए संसाधनों में बढ़ोत्तरी द्वारा तथा आधुनिक तरीकों पर नए सिरे से शोध द्वारा प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम आदर्श बन सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इस विषयक प्राथमिक शिक्षा एवं अनुसंधान को प्रतिपादित किया गया है।

I पृष्ठभूमि

विभिन्न विद्वानों ने प्राथमिक शिक्षा के महव को प्रतिपादित किया है। इसके आधार पर शिक्षा की कुछ विशेषताएँ उभरकर आयी हैं। इन विशेषताओं में इसे निरन्तर प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षा एवं शोध विकास की प्रक्रिया है। अर्थशास्त्री इसको मानव में विनियोग मानते हैं, तो व्यवहारवादी इसे एक सोद्देश्य प्रक्रिया मानते हैं। दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजश॥स्त्री दृष्टिकोणों से भी शिक्षा के अर्थ व कार्यों का पृथक–पृथक महत्व बताया गया हैं। मनोवैज्ञानिक इसे मानव–विकास की प्रक्रिया बताते हैं तो समाजशास्त्री इसे समाज में संस्कृति के हस्तान्तरण तथा सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन मानते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा एंक ऐसा विषय है जिसकी विवेचना तथा अध्ययन सभी दर्शनों में तथा सभी वर्गों के विद्वानों द्वारा किया गया है।

II अनुसंधान की आवश्यकता

प्राथमिक शैक्षिक अनुसन्धान का केन्द्र छात्र का विकास ही है जो विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से सम्पन्न होता है। अतः शैक्षिक अनुसन्धान का अधिकांश क्षेत्र विकासात्मक अध्ययनों से ही परिपूर्ण है। प्राथमिक शिक्षा में बालकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा व्यक्तित्व विकास हेतु समय–समय पर शोध कार्य हुए है, व आज भी जारी हैं। अभिरूचियाँ तथा अभिवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं। वे वातावरण जन्य प्रभावों से अभिसंधानित होती हैं। अतः बालक की प्राथमिक शिक्षा महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होती है। प्राथमिक विद्यालयों में हस्तलेख, पठन तथा शब्द–विन्यास आदि ऐसी दक्षताएँ हैं, जो शिक्षण विद्यालयों के साधनों के द्वारा विकसित की जाती है। हस्तलेख के क्षेत्र में गति, पठनीयता धारा–प्रवाहिता आदि पक्षों में पर्याप्त अनुसन्धान कार्य किया जा रहा है । "परीक्षण–पत्रों एवं मापदण्डों का निर्माण एवं मानकीकरण भी होता है। साथ ही इस क्षेत्र में पर्याप्त निदानात्मक कार्य भी किया जा रहा है।"2 इसी प्रकार पठन के क्षेत्र में भी शब्द–भण्डार, समझ, गति, अभिरूचि तथा आदतों के अनुसार आधार पुस्तकों तथा सहायक पुस्तकों के पठन आदि से सम्बन्धित अनेक सम्यक समाधान हेतु अनुसन्धान किये जा रहे है। शब्द–विन्यास के क्षेत्र में पर्याप्त उपयोगी सर्वेक्षण की आवश्यकता हैं।

पाठ्य–पुस्तकों के क्षेत्र में भी अन्वेषण कार्य हो रहे हैं। किसी विषय के अध्ययन के उद्देश्यों और अध्यापन–पद्धतियों में पाठ्य–पुस्तकों की आवश्यकता रहती है। विद्यालयों में अब भाषा के महत्त्व में परिवर्तन आने, उसकी अध्यापन–पद्धतियों में परिवर्तन एवं उसके भाषा–विज्ञान सम्बन्धी विश्लेषण के कारण अब वर्तमान प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों की उपयुक्तता सम्यक अनुसन्धान द्वारा निरीक्षित किये जाने की आवश्यकता है। भाषा के अध्यापन में व्याकरण तथा अनुवाद की पद्धति को समझने और उसमें रचनावादी पद्धति एवं संचरण कौशल प्रारम्भ करने की आवश्यकताओं को अनुसन्धान द्वारा सिद्ध किया जा रहा है। इसी के अनुरूप प्राथमिक विद्यालयों की नवीन पाठ्य–पुस्तकें लिखना पाठ्य पुस्तकों में शब्दकोश, छपाई तथा चित्रों की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। विचारों का जगत, जिनसे हमें छात्रों को परिचित कराते हैं, निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं, इनके साथ–साथ पाठ्यक्रम प्रक्रिया भी परिवर्तित हो रही है। प्राथमिक विद्यालयों में विषय–वस्तु अध्यापन हेतु निश्चित हैं, उसका समय–समय पर पुनर्मूल्यांकन हो रहा है। फलतः कुछ परिवर्तन भी उपस्थित हुए। परन्तु प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में प्रस्तुत किये गये परिवर्तनों की व्यावहारिक प्रमाणों तथा अनुसन्धान द्वारा निरीक्षित किये जाने की आवश्यकता है। कौन–सी–विषय–वस्तु पढ़ानी है ? कितना पढ़ाना है ? और किस रूप में पढ़ाना है ? प्राथमिक शिक्षा में इस हेतु अनुसन्धान कार्य हो रहे हैं। हमारे देश में चिन्तन, विवेचन तथा अनुसन्धान की प्रवृत्तियाँ उत्तरोत्तर बढ़ रही है। प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों की न्यूनतम आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु न्यूनतम आवश्यक पाठ्यक्रम की खोज पर अनुसंधान होना चाहिए। वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण होना आवश्यक है। समस्याओं को समझना व निराकरण करना अनुसन्धानकर्त्ताओं, शिक्षाविदों तथा शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। अनुसंधान

में उपयुक्त पाठ्यक्रम–निर्धारण तथा उपयुक्त प्रकार की पाठ्य–पुस्तकों को निश्चित करना भी सम्बन्धित हैं।

III निष्कर्ष

"प्राथमिक शैक्षणिक अनुसन्धान का क्षेत्र शिक्षा से संबंधित है। प्राथमिक शिक्षा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि शैक्षणिक अनुसन्धान के द्वारा क्षेत्र को सीमाबद्ध करना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा के सभी पक्ष को परस्पर एक–दूसरे में अन्तर्निहित होना चाहिए।"3 प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक–सामाजिक ढाँचा तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है, अतः शिक्षा को वर्तमान के अनुरूप बनाकर उसकी उपयोगिता को बढ़ाने के लिए शैक्षिक अनुसन्धान हो रहे हैं।

प्राथमिक विद्यालयों के अनुसन्धान कार्य में संवेदनशील प्रक्रियाओं, का प्रयोग होता है तथा प्राप्त सामान्यीकरण विस्तृत क्षेत्र पर लागू होते हैं। मूलभूत अनुसन्धान का सम्बन्ध सिद्धान्त से होता है। इस पर उपयोगिता के विचार का प्रभाव पड़ता है। अनुसन्धान में वे शोध कार्य सम्मिलित किये जाते हैं, जिनके द्वारा किसी विशेष का समाधान आवश्यक है। प्राथमिक विद्यालयों के तथ्यों द्वारा यदि अनुसन्धानकर्ता किसी क्रियात्मक शिक्षा का समाधान करे तो यह अनुसन्धान है। इस प्रकार का अनुसन्धान प्राथमिक शिक्षा में नवीन ज्ञान की उपलब्धि, खोजे गये प्रत्यय, नवीन सिद्धान्त और स्थापित नवीन नियमों को विशिष्ट शैक्षिक परिस्थितियों में उपयोगी है। अनुसन्धानकर्ता पहले से खोजे गये तथ्यों, सिद्धान्तों और सत्यों की नवीन परिस्थितियों में प्रयोग में लाने की योजना बनाता है। अनुसन्धान प्राथमिक शिक्षा के छात्रों को अपने उद्देश्यों को अधिक प्रभावकारी ढंग से प्राप्त करने के लिए परिचालित करता है। अध्ययन में सुधार लाने के उद्देश्य से क्रियात्मक अनुसन्धान भी किया जाता है।

"प्राथमिक विद्यालयों के शैक्षिक अनुसन्धानों द्वारा विचारों एवं व्यवहारों में सुधार का मार्ग प्रशस्त है। इसका रूप वैज्ञानिक होने के कारण इसका महत्व है। इसके द्वारा हम शिक्षा सम्बन्धी नवीन नीतियों तथा अभ्यासों को लागू करा पाते हैं।"4 इसका परिणाम हम देख रहे हैं कि शिक्षा सम्बन्धी नवीन नीति सफलता प्राप्त कर रही है। विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है तथा प्रत्येक विषय में तीव्र गति से नवीन सामग्री बढ़ रही है। अतः इस नवीन ज्ञान के शिक्षण के लिए अनुसन्धान की नवीन शिक्षण विधियों को महत्व मिल रहा है। प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने में अनुसन्धान द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। इस प्रकार के प्राथमिक शिक्षा विषयक अनुसन्धान के सम्बन्ध में मौलिक शोध किये जा रहे हैं और इस अनुरान्धान का उद्देश्य विद्यालयों के लिए नवीन ज्ञान की प्राप्ति है। शोध में नवीन तथ्यों का अध्ययन किया जाता है और साथ ही जॉच की जाती है कि प्रचलित नियम वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में ठीक हैं या नहीं। अनुसन्धान में नवीन सिद्धान्त व नियमों की खोज नवीन परिस्थितियों को सहयोग करती है, इसका उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति वृद्धि तथा शुद्धिकरण होता है।

संदर्भ सूची

{1} डॉ. देवेश जैन : प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा सुधार, पृ. 214

{2} डॉ. जगदीश निपूरिया : शिक्षा में अनुसंधान के आयाम, पृ. 115

{3} डॉ. रेशमा खान : आधुनिक प्राथमिक शिक्षा, पृ. 179

{4} डॉ. ममता सिंह चौहान : वैज्ञानिक अनुसंधान एवं शिक्षा, पृ. 99